Shree Shivkrupanand Swami
Founder
Gurutattva

24-2-2022
गुरुवार

2022

"समर्पण" वर्ष घोषीत है।

सभी पुण्यआत्माओ को मेरा नमस्कार — — —
इस वर्ष की स्थिती को देखते हुये गुरुशक्तीयो ने इस वर्ष "2022" को "समर्पण वर्ष" घोषीत किया है, इसकी "आवश्यकता" इसलीये है, क्योकी समर्पण ध्यान संस्कार को समाज मे आये 27 साल हो चुके है। अभी भी कुछ ही साधक साधीका अपने लक्ष्य को पा पाये है, और "गुरुशक्तीया तो कुछ को नही" "सभी को अपने साथ ले जाना चाहती है," हमारे साथ जो नही प्रगती कर पाये है, कारण कुछ भी हो पर वे भी साथ हो जाये

इसी पवित्र भावना से गुरुशक्तीयो ने "इसवर्ष को समर्पणवर्ष घोषीत किया है," उद्देश एक ही है, प्रत्येक साधक का समर्पण अपने शरीर से अपनी आत्मा के प्रति हो जाये और बाकी जिवन वह शरीरभाव मे नही "आत्मभाव" मे जीये अभी साधको का ध्यान प्रचारकार्य पर अधीक है, लेकीन वे प्रचार कार्य "मै" के साथ कर रहे है, "मै" के शरीरभाव के साथ कभी प्रचार नही होता है, वास्तव मे प्रचार तो आत्मा का अतीशुद्ध भाव है, प्रचार कभी भी किया नही जाता हो जाता है, यह ठिक वैसा ही है, समर्पण किया नही जाता हो जाता है साधक जैसे शरीर से मै के साथ प्रचार करते है, वैसे ही "मै" के साथ गुरुकार्य करते है, यह भी ठिक नही है, "एक पवित्र आत्मा ने परमात्मा के लिये कीया गया कार्य ही गुरुकार्य कहलाता है," इसमे मै का शरीरभाव नही होना है, गुरुकार्य भी सहजभाव से घटित होना चाहिये वहाँ

"कर्ता" का भाव नहीं हो जैसे "मैं" के साथ प्रयोग करते हैं, वैसे ही गुरुकार्य भी करते हैं, ठीक-वैसा ही ध्यान भी करते हैं, क्योंकी ध्यान के साथ "उपेक्षा" होती ही है, जहाँ अपेक्षा है, वहाँ "शरीरभाव" है, और जहाँ शरीरभाव है, वहाँ "मैं" है।

आप को कितनी बार बताया की ध्यान अपेक्षा के साथ न करे आप ध्यान को अच्छा "शौक" समझ कर भी कर सकते है, जैसा ध्यान करते तो वैसा ही "दान" करते हो दान भी कीसी भी अपेक्षा के साथ न हो "दान केवल और केवल आत्मा को प्रसन्न करने के लिये ही किया जाना है" नियमीत ध्यान साधना से साधक आत्मभाव मे जीता है, ध्यान साधना का प्रभाव पहले उसके ~~पल्ले~~ शरीर पडता है, आत्मा का नियंत्रण शरीर पर हो ही जाता है, वह साधक-अनुशासन मे नियमो के अधीन-ही चलता है, "उसका शरीर कोई अनुशासन नहीं तोडता है"

(4)

साधक की संगत अच्छे आत्माओं के साथ हो जाती बुरे लोगों से वह दूर ही हो जाता है, नकारात्मक लोग उसके आसपास भी नहीं आते हैं, वह कभी भी अपने आत्मा के विरोध में कार्य नहीं करता है, वह तो समर्पणध्यान संस्कार का "पोस्टर" ही बन जाता है, उसके स्वभाव व व्यवहार को देख कर ही बाकी लोग उसकी ओर आकर्षित हो जाते हैं, क्योंकी वह अपने जिवन में समाधानी होता है, उसमें स्विकार भाव होने से उसकी कभी कोई शिकायत नहीं होती है,

कुछ साधक तो इसमार्ग में आये हैं, जिनमें सालों से भी कोई बदलाव नहीं आया है, और ऐसे साधकों में कोई "आचरण" में बदलाव न होने से "समर्पणध्यान संस्कार का बुरा प्रचार हुआ है," ऐसे साधक नहीं आते तो ही अच्छा था पर ऐसा नहीं हो सकता गुरु तो समुद्र होता है, कई नदीयां आकर उसमें अपना अस्तीत्व खो देती है, और समुद्र कहलाती है, पर एक "लकड़ा" सालों समुद्र में रहकर भी लकड़ा ही बना रहता है,

और किसी बड़ी लहर के साथ समुद्र के पानी के बाहर फेंक जाता है, इस लीये "नदी बनो जो अपना नदी का अस्तीत्व खो कर समुद्र कहलाती है," समुद्र तो नदी को भी अपनाता है, और लकड़े को भी अपनाता है,

आपको अभी मंत्र जाप करने को कहा वह भी शरीर से किया गिनने की आवश्यकता नही थी मंत्र तो भितर से ही निकलना चाहीये. अरे बाबा आप मुझसे जुडे हो मै अपने साथ आप को ले चलना चाहता हूं, आप हो की भिड इकट्ठा कर रहे हो हमारा उद्देश्य साधको की "क्वान्टीटी बढाना नही है, क्वालीटी बढाना है" यह सदैव याद रखो बेकार की भीड मत बढाओ आप के स्वयं के दांत पीले है, और आप टुथपेस्ट का प्रचार कर रहे हो इसको कोई अर्थ है, क्या? "पहले अपने दांत स्वच्छ करो" उन्हे चमकाओ फीर लोग ही पुछेंगे कौनसी टुथपेस्ट वापरते हो तब बताओ

Gujarat Samarpan Ashram | Office: +91 9898011555
Mahudi Village, Anodiya, Gandhinagar, Gujarat - 382855 | Email: support@gurutattva.org
Office address: Guru Tattva Bhavan, Shivaji Park, Street No. 4/8, Near Income Tax Society, Raiya Road, Rajkot – 360005

मुझे लगता है, सर्वप्रथम आप "बचपन" मे जाओ
बहुत पहले जाओ। इतने बचपन मे जाओ की आपको
आपके जन्म लेने का "उद्देश" समझ मे आये अगर
जा सकते हो तो माँ के गर्भ मे थे वहाँ तक भी
जाओ। तो आपको आपके जन्म लेने का, इसी माँ
बाप को चुनने का, कारण समझ मे आ जायेगाँ
आपने माँ और बाप को केवल इसलीये चुना था।
ताकी आपके जिवन का एकमात्र उद्देश "आत्मसाक्षात्कार"
पाना है, ऐसा शक्तीशाली पवीत्र शरीर प्राप्त हो सके
जन्म लेकर वह उद्देश तो पुरा हो गया आपने
जिवन मे आत्मसाक्षात्कार भी पा लीया;
"आपने अपने पुर्व जन्म जैसे निकले थे यह जन्म
अब वैसा जीवात्मा नहीं है, "
"यह मेरा अंन्तीम जन्म है, और आपका भी यह अंन्तीम
जन्म होना चाहिये" और अंन्तीम जन्म तो तभी
होगा। जब इसी जन्म मे "कर्ममुक्त अवस्था" को
प्राप्त करो कर्ममुक्त अवस्था तो तब तक नहीं
प्राप्त हो सकती जब तक "अंन्तर मुखी" नहीं होते
हो अंन्तरमुखी जब तक नहीं हो सकते जब
तक "मैं" का भाव विद्यमान है;

Gujarat Samarpan Ashram | Office: +91 9898011555
Mahudi Village, Anodiya, Gandhinagar, Gujarat - 382855 | Email: support@gurutattva.org
Office address: Guru Tattva Bhavan, Shivaji Park, Street No. 4/8, Near Income Tax Society, Raiya Road, Rajkot – 360005

(7)

"मैं" के शरीरभाव के कारण ही आपके साथ कर्म बंधते है. इसलीये आत्मभाव को हृदीगत करो तो शरीरभाव तो वैसे ही समाप्त हो जायेगा। आप स्थुल से नही सुक्ष्मशरीर के साथ जुडो "आपको आत्मसाक्षात्कार भी सुक्ष्म शरीर के माध्यम से ही मीला है।"

आपको आकाश मे उड रही पंतग तो दिख रही है, कोई तो उसे उडा ही रहा है, आप उस पंतगबाज को खोजो अरे बाबा पंतग इतने अच्छे से उड रही है, तो कोई न कोई पंतगबाज भी होगा न, स्थुल शरीर के माध्यम से "विश्वस्तर कार्य" हो रहा है, तो इस स्थुल शरीर को चलाने वाली कोई न कोई सुक्ष्म शक्ती होगी ही न उस सुक्ष्मशक्ती को खोजो वह जिवन मे खोज पाये तो आप अंन्तर्मुखी स्वंयम ही हो जायेगे "परमात्मा" ही मील जायेगा तो फीर मैं का विलय हो जायेगा और इसी जिवनकाल मे आपसे इतना कार्य होगा जो सोचा भी न होगा- इतना दान होगा जो सोचा भी न होगा-

इतना अच्छा ध्यान का भी स्थिती प्राप्त होगा - जो सोचा भी न होगा। लेकीन याद रखो तब आप करोगे नही क्योंकी "कर्ता" नही होगा। सब ही होगा। और जब कर्ता ही नही होगा तो कर्म बंधोगे नही न पापकर्म बंधोगे क्योंकी वह होगे ही नही और पुण्य कर्म बंधोगे जो आप संयम के साथ बांधोगे ही नही और "कर्ममुक्त अवस्था" प्राप्त होगी।

यह स्थीती सभी साधको को पाने के लिये अब- प्रयास करो विभीन्न विडीयो शिबीर लगाओ लेकीन प्रचार के लीये नही आपको ही देखने के लिये सेमीनार व आत्मचिंतन शिबीर लगाओ अपनी अनुभुतीया बांटने के लीये मिटींग करो बैठके करो प्रचार के लीये नही आत्मचिंतन के लिये इसमे ध्यान पर चर्चा हो अनुभुती पर चर्चा हो आप इस वर्ष मे "अपने आप की प्रगती करो" तो "मैं" का शरीरभाव ही गिर जायेगा और आत्मभाव जाग्रत होगा। तब आप सभी को अपने जिवन का उद्देश का ज्ञान हो जायेगा "आत्मसाक्षात्कार" क्या है, यह कितना बहुमुल्य है, इसका भी

ज्ञान हो जायेगा। आप किस "परमात्मा" के माध्यम के "जिवनकाल" मे जी रहे है, इसका भी ज्ञान हो जायेगा। आपके शरीर मे कुंडलीनी शक्ती कैसे कार्यरत है, चक्रो पर कैसे स्पंदन होते है यह भी ज्ञान हो जायेगा।

आप का आचरण भी बदल जायेगा। आपकी बुरी आदते भी छुट जायेगी अभी तो आप जो कार्य आपने नही किया है, वह भी मैने कीया कह कर अपने साथ बांन्ध लेते हो लेकीन सदैव याद रखो गुरुशक्तीया जानती है, पर बोलती कुछ भी नही बाद मे तो दुसरे का तो छोडो स्वंयम ने कीया कार्य भी मैने कीया नही कहोगे आपकी संगत बदल जायेगी आप अच्छी पवीत्र व कर्ममुक्त अवस्था प्राप्त साधको के सम्पर्क मे आयोगे कई साधक "कर्ममुक्त अवस्था" अपने ही जिवनकाल मे प्राप्त कर चुके है, लेकीन आपको इसलीये पता नही है, क्योकी आपकी वह "आध्यात्मीक प्रगती" नही हुयी है, आध्यात्मीक प्रगती होगी तो उन साधको के भी सम्पर्क मे आओगे फिर आपको समझेगा की आत्मसाक्षात्कार इसलीये पाना था की मै का शरीरभाव ही समाप्त हो जाये और आत्मभाव प्राप्त हो

Shree Shivkrupanand Swami
Founder
Gurutattva

अभी तो आप आत्मसाक्षात्कार प्राप्त कर के भी
क्यो प्राप्त कीया, और यह प्राप्त करने के लीये ही
यह शरीरधारण कीया था "इसका भी ज्ञान नही
है।"
स्थुल शरीर से सुक्ष्म शरीर तक की यात्रा करो
वहाँ पहुच कर अनुभव होगा की आत्मा क्या
है, और कितने जन्मो से हम आत्मसाक्षात्कार
पाने प्रयास कर रहे थे क्योकी आत्मसाक्षात्कार
से आत्मबोध होता है, और कर्ममुक्त अवस्था
जिसे मोक्ष कहते है वह प्राप्त होती है, और
यही पाना प्रत्येक आत्मा का अंतीम लक्ष्य
होता है, आपने दुसरो के लीये खुब करलिया
अब अपने आप के कल्यान के लीये करे
फिर कह रहा हुँ, "मुझे क्वान्टीटी नही क्वालीटी
चाहीये" और यह "नियमीत ध्यान साधना"
से संभव है लेकीन यह अपेक्षा रहीत हो-
यह मार्ग "बुद्धी" का नही है, की कुछ जान सको
यह हृदय के "भाव" का मार्ग है, जो "अनुभुती" तक
जाता है।
आप सभी को खुब खुब आर्शीवाद

आपका अपना
बाबास्वामी
24/2/2022

Gujarat Samarpan Ashram | Office: +91 9898011555
Mahudi Village, Anodiya, Gandhinagar, Gujarat - 382855 | Email: support@gurutattva.org
Office address: Guru Tattva Bhavan, Shivaji Park, Street No. 4/8, Near Income Tax Society, Raiya Road, Rajkot – 360005